डोरा की किताब

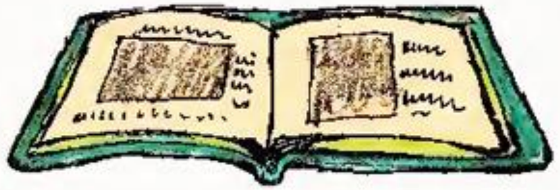


लेखन व चित्रः मिशैल एडवर्डस्
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

डोरा की किताब



डोरा की किताब



लेखन व चित्रः मिशैल एडवर्डस्

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





वैलरी लीवेस की स्मृति में,

जो एक अच्छी दोस्त और पडौसन हैं।



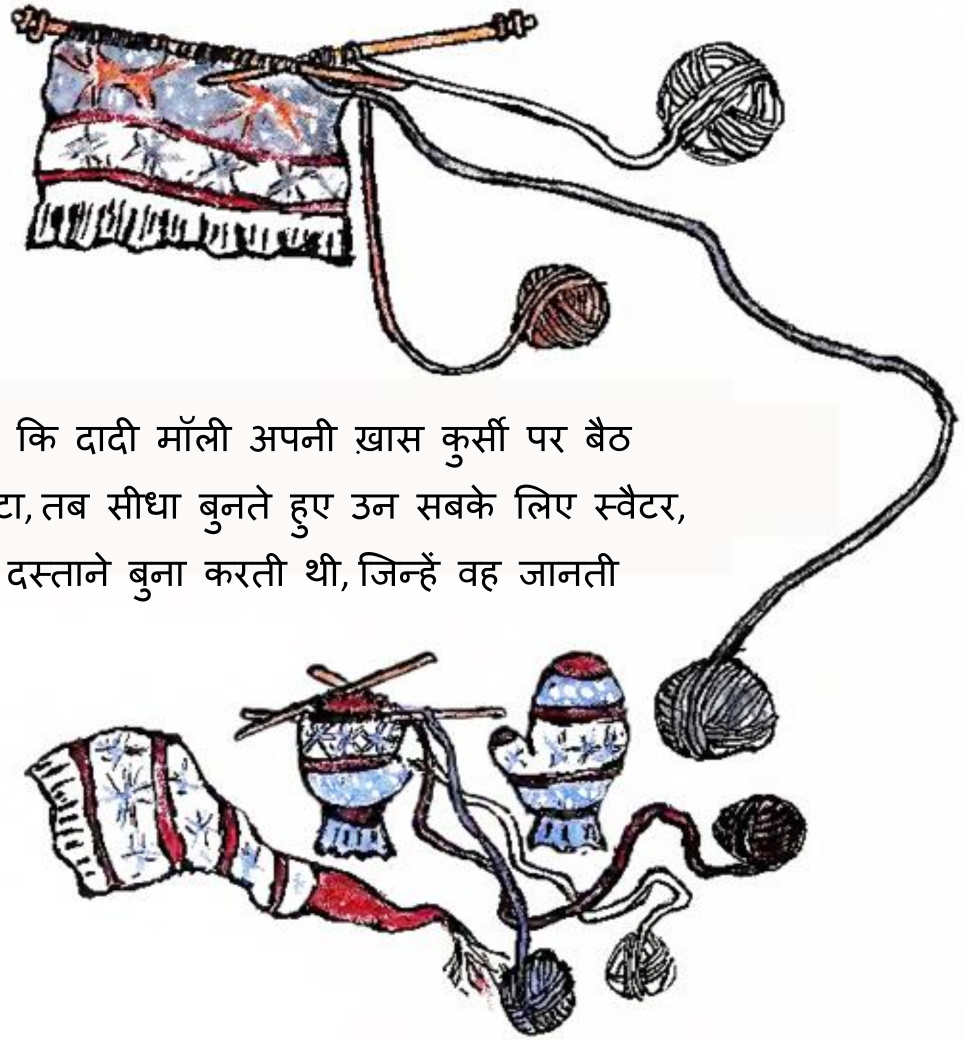
उत्तरी मिनेसोटा में जहाँ सर्दियाँ भयंकर होती हैं, डोरा नाम की एक वृद्ध स्त्री रहती थी। जब दिन छोटे हो जाते और सर्द हवाएं बहतीं, डोरा घर के अन्दर खुद को गर्म रखने की कोशिश करती। वह अपनी पसन्दीदा रज़ाई में दुबकी रहती। डोरा को अपनी दादी मॉली और दादा मैक्स के बारे में सोचना अच्छा लगता था।



एक रात खाना खाने के बाद डोरा ने तय किया कि वह और बूढ़ी, और भुलक्कड़ बने उसके पहले वह अपनी दादी मॉली और दादा मैक्स, और वे जैसे रहते थे, उस सबके बारे में जो कुछ उसे याद है, वह सब लिख डालेगी।

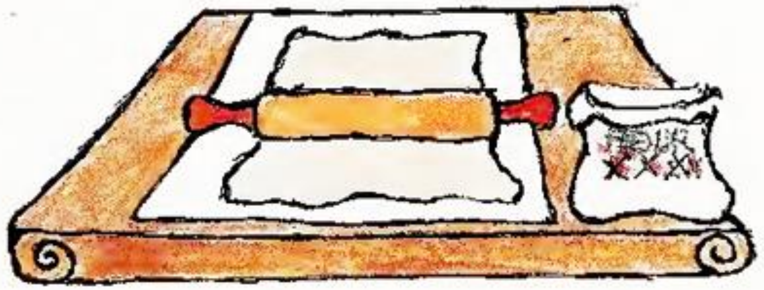
डोरा ने लिखा कि दादा मैक्स कैसे सामने वाले आँगन में उगे बलूत की टहनियों को काट-छांट और घिस-रगड़ कर दादी मॉली के लिए बुनने की सलाइयाँ बना दिया करते थे।



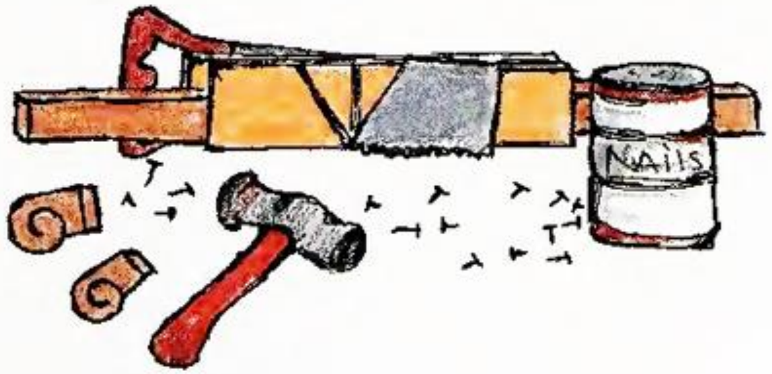


उसने बताया कि दादी मॉली अपनी ख़ास कुर्सी पर बैठ फंदों को उल्टा, तब सीधा बुनते हुए उन सबके लिए स्वैटर, टोपियाँ और दस्ताने बुना करती थी, जिन्हें वह जानती थी।

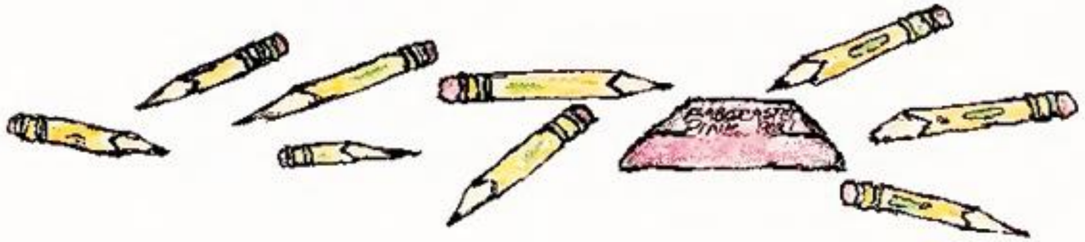
उसने बताया कि दादी मॉली अपने स्ट्रूडल (मीठा पकवान) के लिए लोई को कागज़ जितना पतला बेला करती थी।



और दादा मैक्स फर्नीचर बनाने के लिए लकड़ी को रन्दे से घिसते और हथौड़े से कीलें ठोका करते थे।



सर्दियों भर डोरा लिखती गई, लिखती और लिखती गई। उसने कोशिश की कि उसके शब्द उसकी यादों का सही वर्णन करें। पर कुछ चीज़ें ऐसी थीं, जैसे दादी मॉली की मुस्कान या दादा मैक्स की दाढ़ी जिनके लिए चित्र ज़रूरी थे।



सो बसन्त में डोरा ने अपनी पेन्सिलें निकालीं ओर चित्र आँकने लगी। वह आँकती और मिटाती, फिर आँकती, फिर मिटाती। उसने मॉली और मैक्स के चित्र आँके।

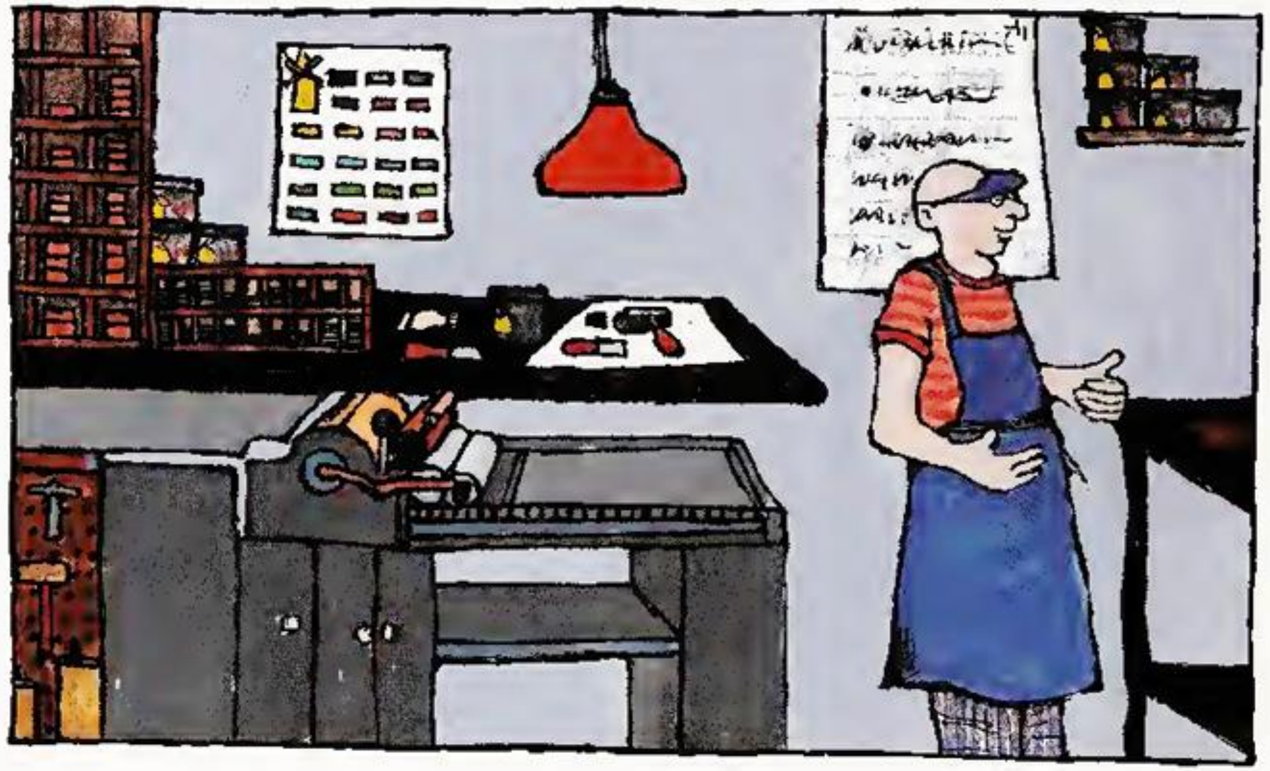




उसने सर्दियों में उनके घर के चित्र बनाए, जब बाहर बर्फ की ऊँची ढेरियाँ हुआ करती थीं, और गर्मियों में उनके बाग में भी, जब वह टमाटरों और अंगूरों से लदा हुआ करता था।



उसने उनकी बैठक के चित्र बनाए जिसमें दादा मैक्स की बनाई पढ़ने वाली कुर्सी थी, और दादी मॉली की लीरियों को बुन कर बनाई गई दरी थी। डोरा ने उनकी रसोई का चित्र भी आँका जिसमें उनका बड़ा काला अलाव था।



गर्मियों में डोरा ने अपने चित्र खत्म कर लिए। उसने अपने सारे चित्र और कहानियाँ इकट्ठा कीं और उन्हें कस्बे पार अपने सबसे अच्छे दोस्त टॉम को दिखाने ले गई।

''टॉम लगता है मेरे पास एक किताब है,'' डोरा ने कहा।

टॉम एक मुद्रक था, यानी वह छापने का काम करता था। उसके तहखाने में एक पुरानी छापा मशीन थी और दराज-दर-दराज धातु के टुकड़ों से भरे थे, जिन पर उभरे हुए अक्षर उकेरे हुए थे। वह इन टुकड़ों को 'टाइप' कहा करता था।



''क्या तुम्हारी पुरानी छापा मशन मेरी किताब छाप सकेगी?'' डोरा ने पूछा।

''शर्तिया,'' टॉम ने कहा। ''मैंने उस पुरानी मशीन पर कई किताबें छापी हैं। पर अपन पहले तुम्हारे चित्र शहर में एक खास जगह भेजते हैं। वे लोग चित्रों को धातु पर बना देंगे। पर उभार के साथ, ताकि उन्हें भी टाइप के अक्षरों की तरह छापा जा सके। तब मैं तुम्हारे चित्रों को भी छापा मशीन पर ही छाप सकूंगा।''

जब धातु पर बने चित्र आए तो वे थे
तो डोरा के चित्रों जैसे, पर उल्टे थे।



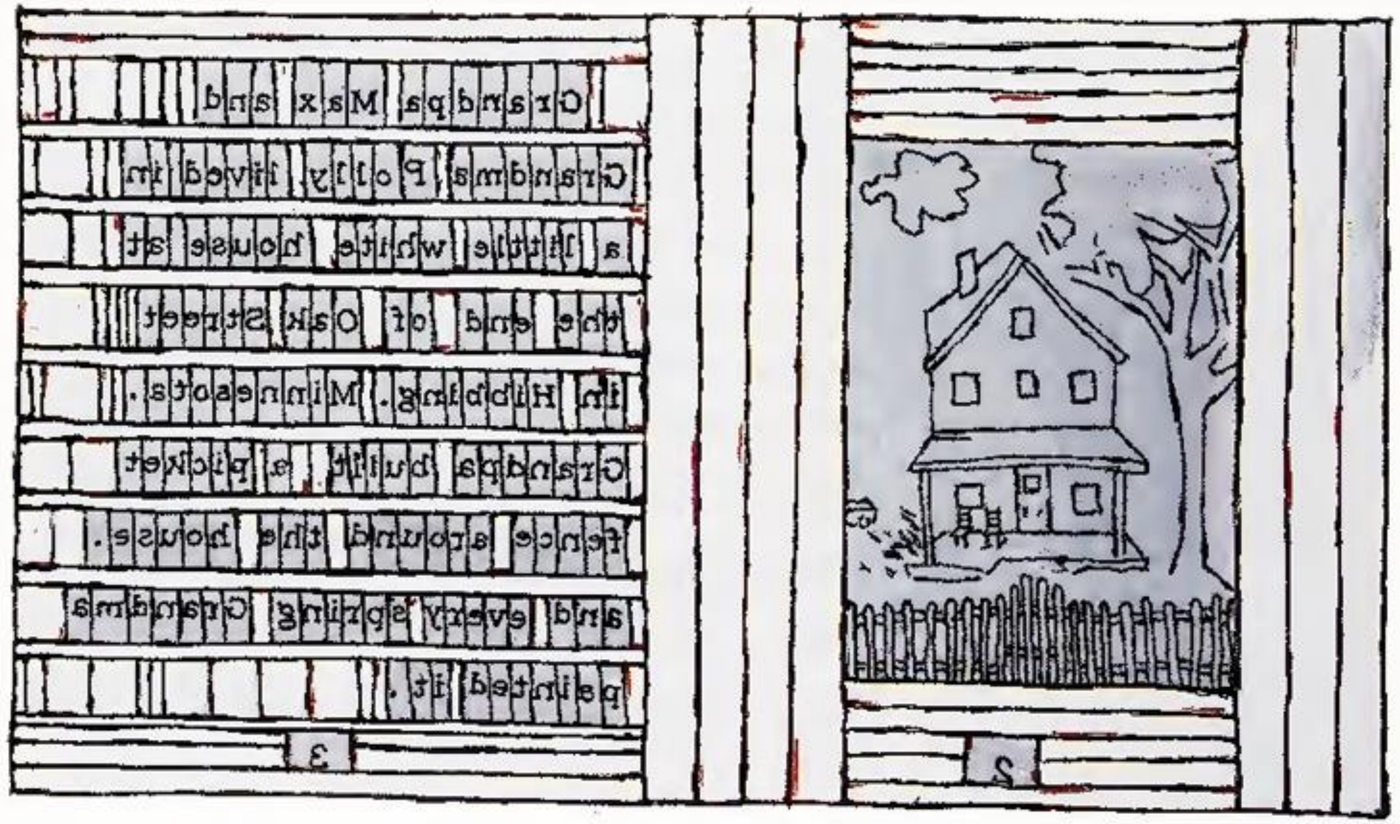
''बढ़िया,'' टॉम ने कहा। ''इन्हें ठीक ऐसा ही होना चाहिए।''

तब टॉम ने डोरा को दिखाया कि टाइप को
पन्ना बनाने के लिए कैसे जंचाया जाता है।



उन्होंने धातु से बने अक्षरों को एक-एक कर दराजों से
निकाला, ताकि डोरा अपनी कहानियों के शब्द बना सके।

अक्षर दर अक्षर, शब्द दर शब्द, वाक्य दर वाक्य, जोड़ते हुए उन्होंने एक-एक पन्ना बनाया। कुछ पन्नों पर उन्होंने धातु के चित्र और कुछ शब्द जमाए। पर डोरा ने देखा कि हर पन्ने पर हर चीज़ उल्टी थी।

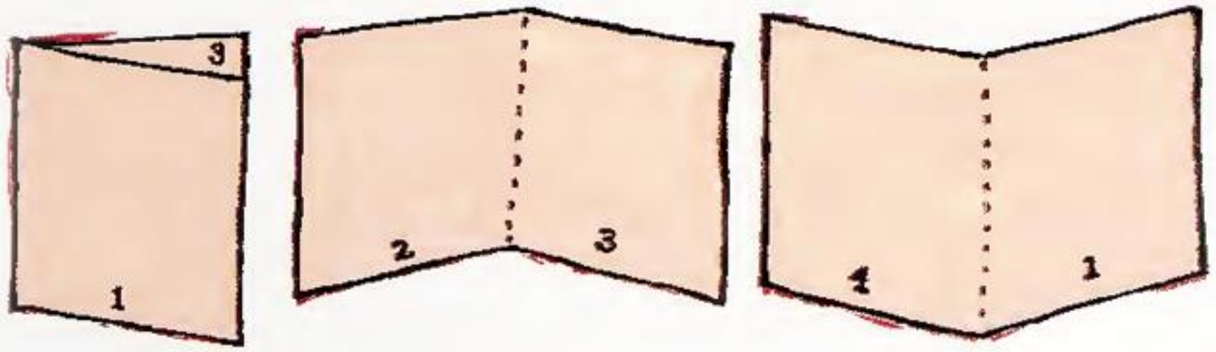


''बढ़िया,'' टॉम ने पहला पन्ना देख कहा। ''इसे ठीक ऐसा ही होना चाहिए।''

''सिवा एक बात के ...,'' डोरा बोली। ''दादी का नाम मॉली था, पॉली नहीं।'' डोरा की ज़िम्मेदारी थी कि वह हर पन्ने में हुई गलतियों को ढूंढ़ निकाले।



जब टॉम ने सारी गलतियाँ सुधार दीं, पन्ने छपने को तैयार थे। किताब कागज़ की बड़ी शीटों पर छपने वाली थी, जिसमें हरेक पर चार पन्ने छापे जा सकते थे। दो कागज़ के सामने वाले हिस्से पर और दो पीछे।

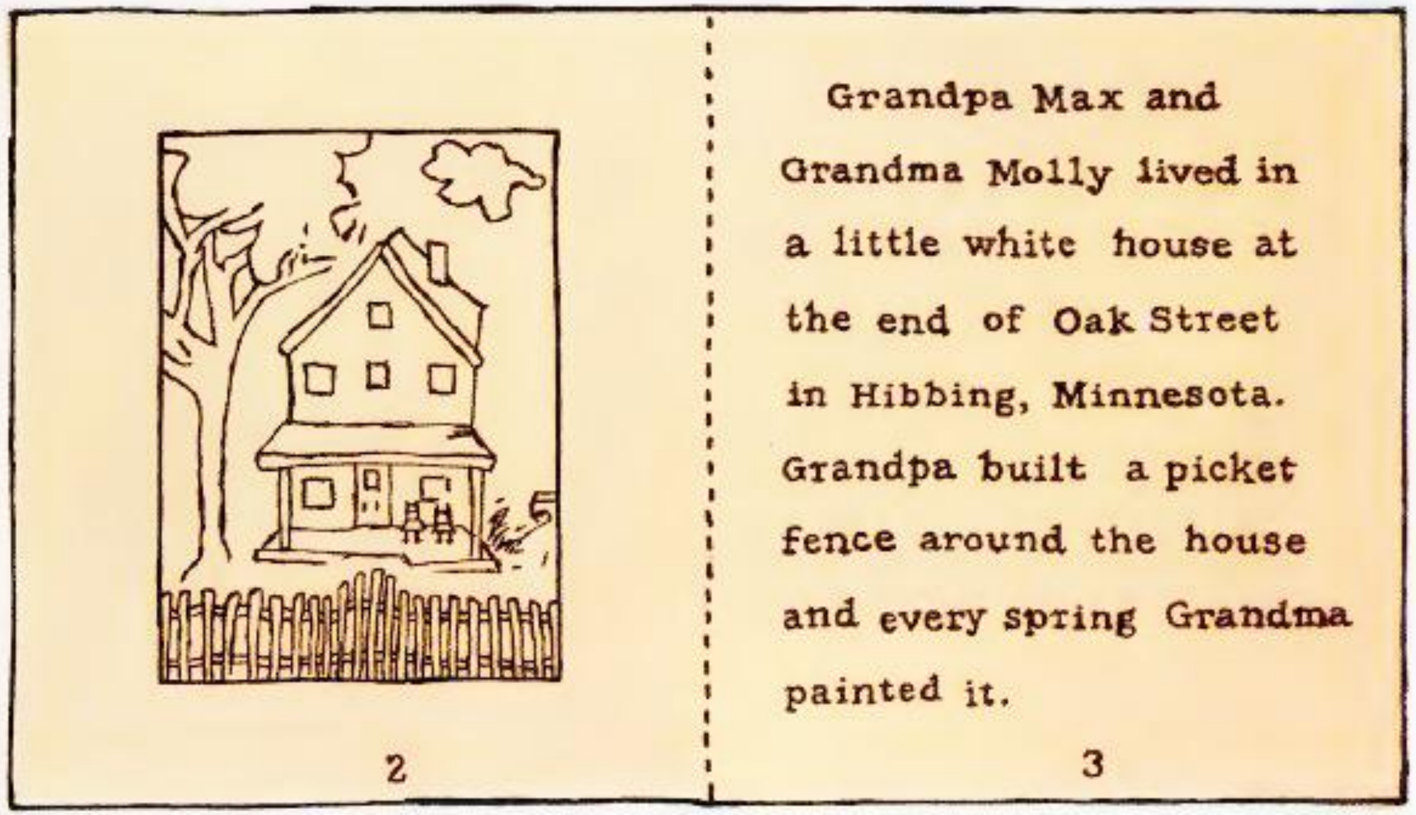


टॉम ने अपने स्याही वाले चाकू को चिपचिपी काली स्याही वाले डब्बे में घुसेड़ा और तब स्याही छापा मशीन पर बने रोलर पर फैला दी।



खटाक, खटाक, खटाक! टॉम ने छापा मशीन के हत्थे को घुमाया और रोलर धातु के अक्षरों और चित्रों पर घूमा। जो भी हिस्से उभरे हुए थे वे स्याही से पुत गए। तब कागज़ को स्याही पुते अक्षरों और चित्रों पर ज़ोर से दबाया गया। पहला पन्ना छप चुका था!

जब टॉम ने कागज़ उठाया वह धातु से बने पन्ने-सा ही था, बस अब अक्षर और चित्र उलटे नहीं थे।



"बढ़िया," डोरा ने कहा। "अब सब वैसा है जैसा उसे दिखना चाहिए।"

पन्ना दर पन्ना टॉम ने डोरा के सभी चित्र और कहानियाँ छाप डालीं।

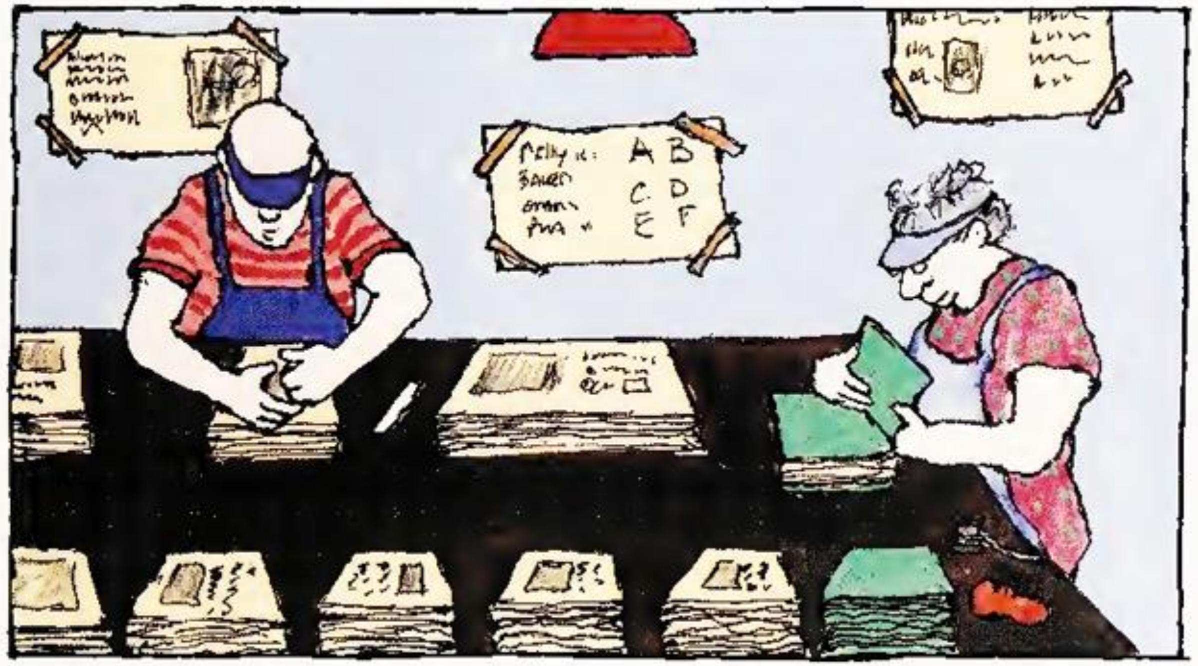


डोरा ने भी मदद की। वह टॉम के लिए चाय
और दादी की विधि से बनाया स्ट्रूडल लाई।

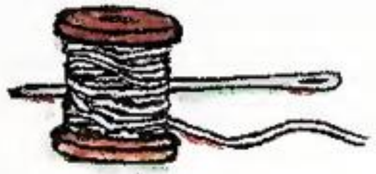


जब सारे पन्ने छप गए, टॉम के तहखाने में चारों
ओर छपे कागज़ों की ढ़ेरियाँ थीं।

"और अब इन्हें साथ बांधना है," टॉम ने कहा।



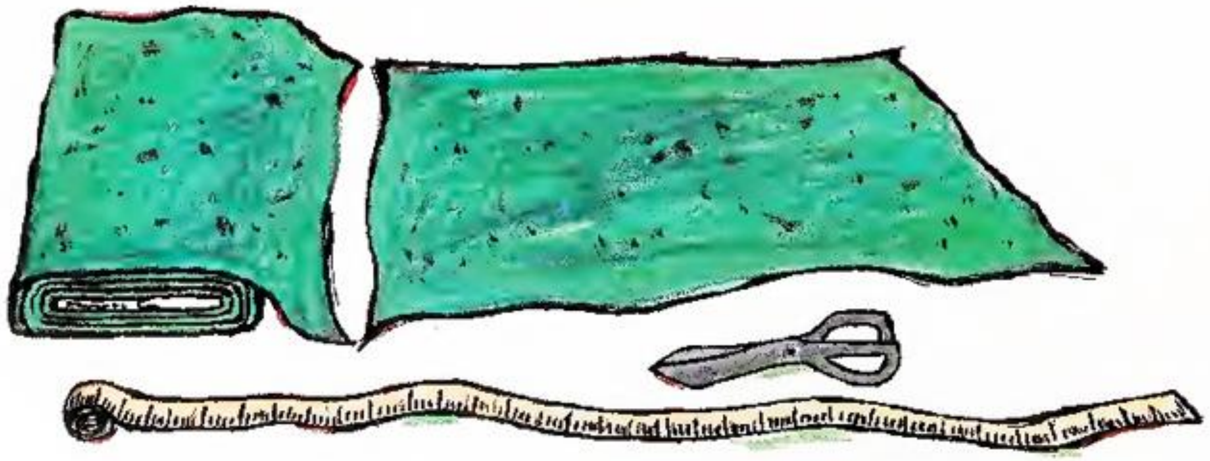
टॉम और डोरा ने सारे पन्ने पहले मोड़े और तब उन्हें सही क्रम में रखा। तब
एक-एक किताब के पन्नों को सिला गया। पहले और अख़िरी पन्ने पर बढ़िया
हरा कागज़ चिपकाया गया। ये किताब के अंतिम कागज़ कहलाते थे।



किताब की जिल्द बनाने के लिए टॉम ने भारी गत्ते के टुकड़े काटे, और किताब की रीढ़ के लिए लचीली लाल पट्टियाँ काटीं।

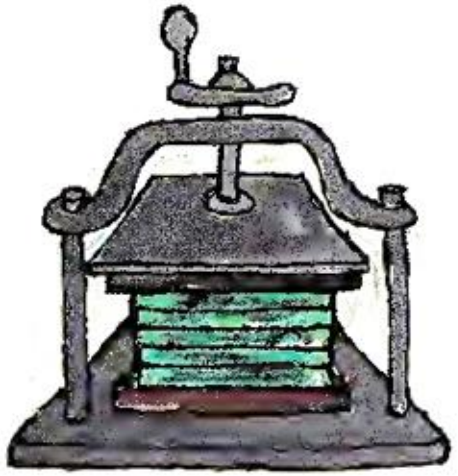


डोरा ने गजों हरा कपड़ा काट कर हरेक गत्ते के टुकड़े पर चिपकाया।





जब जिल्द तैयार हो गई टॉम और डोरा ने उन्हें अंतिम कागज़ों पर चिपकाया और तब किताबों को दबाने वाले यंत्र में रख दिया। जब गोंद पूरी तरह सूख गई, किताबें तैयार थीं।



"इतनी बुरी भी नहीं है डोरा," टॉम ने डोरा को एक किताब पकड़ाते हुए कहा।



"ये तो बेहद सुन्दर है!" डोरा ने खुशी से गमकते हुए कहा।

"पर ये तो ढ़ेरों किताबें हैं डोरा," टॉम ने कहा। "क्या करने वाली हो इन किताबों का?"



"एक बड़ी-सी दावत दूँगी और इन्हें बांट दूँगी," डोरा ने जवाब दिया।

डोरा ने फर्श बुहारने, कपड़े और कागज़ की चिन्दियाँ फेंकने में टॉम की मदद की।

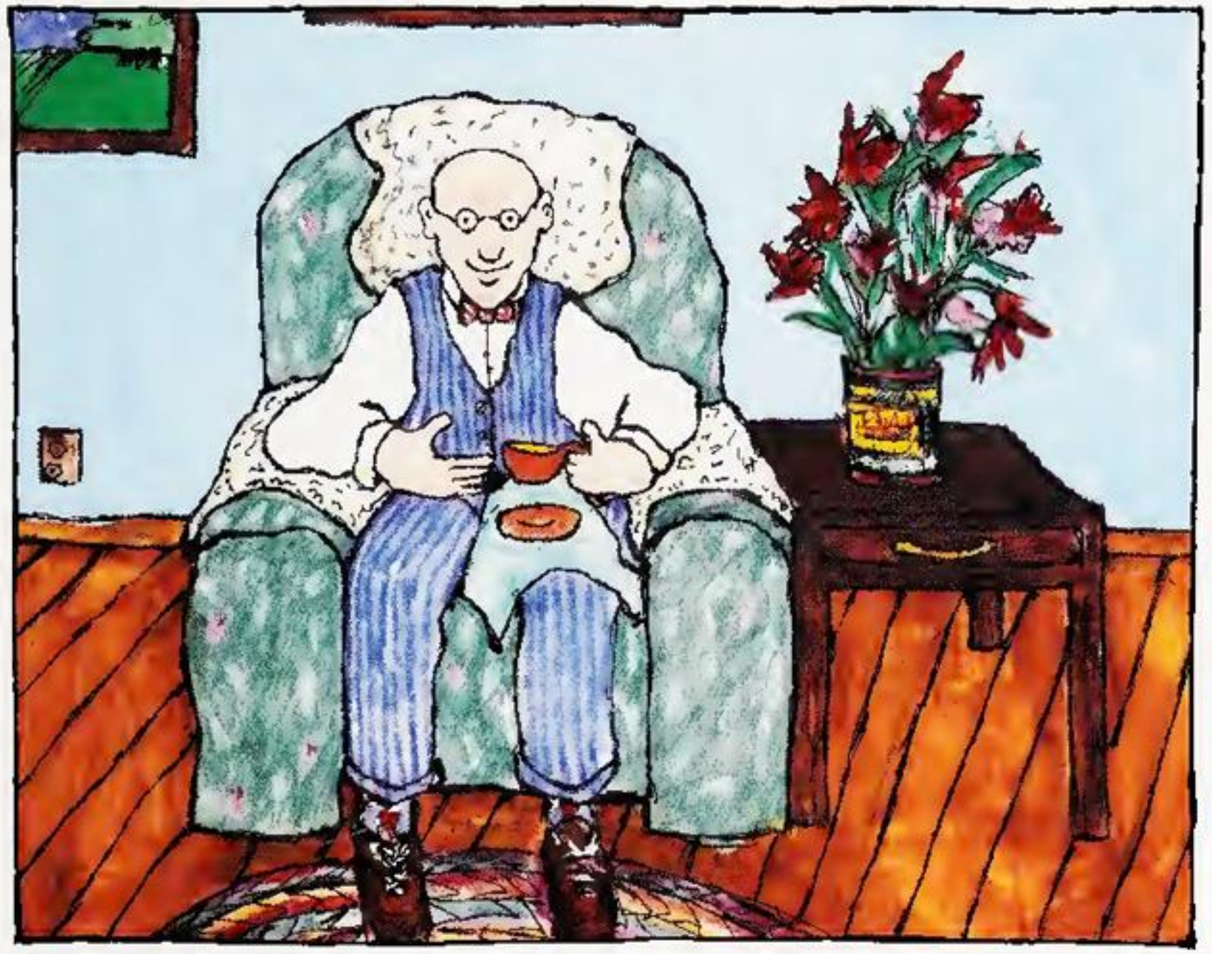


तब दोनों ने मिलकर इस्तमाल किए गए सारे टाइप साफ़ किए और उन्हें दराजों में रखा। टॉम ने डोरा के धातु पर उकेरे चित्रों को साफ़ किया और सावधानी से कागज़ में लपेट दिया, ताकि डोरा उन्हें सहेज कर रख सके। तब टॉम और डोरा ने किताबों को डोरा की ठेलागाड़ी में जमाया, और डोरा उन्हें घर ले गई।





अगले दिन डोरा ने एक बड़ा-सा सेब का स्ट्रूडल बनाया और अपने चमकदार सामोवर में कई लीटर चाय बनाई। उसने अपने दोस्तों और पड़ौसियों को अपनी दावत में शामिल होने बुलाया।



टॉम सबसे सम्मानित मेहमान था।







डोरा ने हरेक को एक-एक किताब दी।
हर किताब में उसने कुछ खास लिखा।

मेरी पडोसन मिसेज़ लेवी को,

दादी अपनी बाड़ को हर साल सफ़ेद रंगती थी। सिवा उस साल के जब उन्होंने उसे गुलाबी रंगा, ठीक मेरी बाड़ की तरह।

डोरा एम. स्केल

चित्रकार





मेरे साथी बागवान स्मिथी को,

उम्मीद है आपको दादा के बागवानी के नुस्खे पसन्द आएंगे। दादा दावा करते थे कि मिससिपि के इस पार उनकी जैविक खाद सबसे बढ़िया थी।

डोरा एम. स्केल

बागवान

मेरी प्यारी दोस्त बैटी को,

ये रही कुछ पकवानों को बनाने की कुछ विधियाँ, जो तुमने मांगी थीं, पर पाई नहीं। स्ट्राबैरी के जैम का राज़ है एक कप ज़्यादा चीनी!

डोरा एम. स्केल

बावर्ची



जब दावत खत्म हो गई, डोरा के पास बस दो ही किताबें बचीं। डोरा ने एक अपने लिए रखी और दूसरी टॉम के लिए। टॉम की किताब पर डोरा ने लिखाः

टॉम को,

जो अच्छा दोस्त, और बेहतरीन छपाई वाला है।

डोरा एम. स्केल





1800 के मध्य के पहले तक किताबें हाथों से ठीक इसी तरह छापी और जिल्दबद्ध की जाती थीं, जैसे टॉम और डोरा ने तैयार की थी। हालांकि कुछ लोग अब भी हाथों से किताबें बनाते हैं, ज़्यादातर किताबें जटिल मशीनों से तैयार की जाती हैं।

हाथों से किताबें बनाने की कला के बारे में तकनीकी सुझावों के लिए मिशैल एडवर्डस्, मिनिसोटा सेंटर फॉर बुक आर्टस् के कार्यकर्ताओं को शुक्रिया अदा करना चाहती हैं।

